International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
An International Quarterly bi-lingual Multidisciplinary Double Blind Open Access Peer Reviewed Refereed Journal
ISSN:2581-9925, Impact Factor (Cosmos: 7.555 & I2OR: 5.105), Volume 08, No. 03(IV)(Special Issue), July-September, 2026, pp. 79-85

मूल्य–आधारित व्यावसायिक व्यवहार

डॉ. विनय कुमार सिंह*

विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान, द ग्रेजुएट स्कूल कॉलेज फॉर वुमेन, जमशेदपुर।

*Corresponding Author: bksinghksc@gmail.com

DOI: सिंह, विनय. (2026). मूल्य-आधारित व्यावसायिक व्यवहार. International Journal of Education, Modern Management, Applied Science &Amp; Social Science, 08(03(IV)), 79–85. https://doi.org/10.62823/ijemmasss/8.3(iv).9588

सार

मानव जीवन मूल्यों पर आधारित है। मूल्य व्यक्ति के चरित्र, व्यवहार, निर्णय और कार्यशैली को दिशा प्रदान करते हैं। जिस प्रकार व्यक्तिगत जीवन में मूल्य व्यक्ति को सही और गलत के बीच अंतर समझने में सहायता करते हैं, उसी प्रकार व्यावसायिक जीवन में भी मूल्यों का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान होता है। आधुनिक युग में व्यवसाय केवल वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन तथा बिक्री तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज, अर्थव्यवस्था, पर्यावरण और मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करने वाली एक महत्वपूर्ण संस्था बन चुका है। इसलिए व्यवसाय में नैतिकता, उत्तरदायित्व और मानवीय मूल्यों का समावेश अनिवार्य माना जाता है। इसी विचार को मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार कहा जाता है। आज के समय में व्यवसायों के सामने अनेक चुनौतियाँ हैं। वैश्वीकरण, तकनीकी विकास, बढ़ती प्रतिस्पर्धा, उपभोक्ताओं की बढ़ती अपेक्षाएँ और बदलती सामाजिक परिस्थितियाँ व्यवसायों को निरंतर प्रभावित कर रही हैं। ऐसी स्थिति में केवल लाभ अर्जित करना ही किसी संगठन की सफलता का मानदंड नहीं रह गया है। समाज अब यह भी देखता है कि कोई संगठन अपने ग्राहकों, कर्मचारियों, निवेशकों और पर्यावरण के प्रति कितना उत्तरदायी है। यदि कोई संस्था केवल आर्थिक लाभ को प्राथमिकता देकर नैतिक मूल्यों की उपेक्षा करती है, तो उसकी विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा प्रभावित हो सकती है। इसके विपरीत जो संस्थाएँ अपने कार्यों में ईमानदारी, पारदर्शिता और सामाजिक उत्तरदायित्व को महत्व देती हैं, वे दीर्घकालिक सफलता प्राप्त करती हैं।

शब्दकोशः *व्यवसाय, मूल्य, उत्तरदायित्व, पारदर्शिता, ईमानदारी, नैतिकता, कानून।*

प्रस्तावना

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध आलेख विश्लेषणात्मक प्रकृति का है और इसके लिए विभिन्न स्रोतों का उपयोग किया गया है। इसमें मुख्य रूप से प्रकाशित ग्रंथ, पत्र–पत्रिकाओं में छपे निबंध एवं लेख आदि को अध्ययन का आधार बनाया गया है।

* *Copyright © 2026 by Author's and Licensed by Inspira. This is an open access article distributed under the Creative Commons Attribution License which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work properly cited.*

* ***A Special Issue for the papers accepted for publication in the Two-Days Multidisciplinary National Seminar on Role of Entrepreneurship in Socio-Economic Upliftment of Women in India(22-23May 2026) Organized by Faculty of Commerce, The Graduate School College for Women, Jamshedpur, Jharkhand (A Constituent Unit of Kolhan University, Chaibasa, Jharkhand)in Collaboration with Jharkhand State Higher Education Council, Department of Higher and Technical Education, Govt. of Jharkhand & Punjab and Sind Bank, Sakchi, Jamshedpur.***

उद्देश्य

मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार व्यवसाय को केवल आर्थिक गतिविधि के रूप में नहीं देखता, बल्कि उसे समाज के विकास का एक महत्वपूर्ण साधन मानता है। यह विचारधारा इस बात पर बल देती है कि व्यवसाय का उद्देश्य केवल धन अर्जित करना नहीं होना चाहिए, बल्कि समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करना, लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाना तथा सतत विकास को प्रोत्साहित करना भी होना चाहिए। मूल्य आधारित व्यवहार व्यवसाय और समाज के बीच विश्वास का संबंध स्थापित करता है तथा संगठन को नैतिक और सामाजिक रूप से उत्तरदायी बनाता है।

वर्तमान समय में अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थाएँ यह स्वीकार कर चुकी हैं कि नैतिकता और लाभप्रदता एक–दूसरे के विरोधी नहीं हैं। वास्तव में, जो संगठन नैतिक मूल्यों को अपनाते हैं, वे ग्राहकों का विश्वास अर्जित करते हैं, कर्मचारियों की निष्ठा प्राप्त करते हैं और बाजार में अपनी स्थायी पहचान बनाते हैं। इस प्रकार मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार केवल एक आदर्श सिद्धांत नहीं बल्कि व्यावहारिक सफलता का आधार भी है।

विश्लेषण

- **मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार का अर्थ एवं अवधारणा**

मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार से आशय ऐसे व्यवहार से है जो नैतिक सिद्धांतों, मानवीय मूल्यों और सामाजिक उत्तरदायित्व पर आधारित हो। यह व्यवसाय के संचालन का ऐसा दृष्टिकोण है जिसमें आर्थिक लाभ के साथ–साथ सामाजिक हित और नैतिकता को भी समान महत्व दिया जाता है। दूसरे शब्दों में, जब कोई संगठन अपने निर्णयों और कार्यों में ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता, न्याय और उत्तरदायित्व को अपनाता है, तब उसका व्यवहार मूल्य आधारित माना जाता है।[1]

व्यवसाय में मूल्य आधारित व्यवहार केवल नियमों और कानूनों के पालन तक सीमित नहीं होता। कई बार कोई कार्य कानूनी रूप से सही हो सकता है, लेकिन नैतिक दृष्टि से उचित नहीं होता। मूल्य आधारित व्यवहार ऐसी परिस्थितियों में भी नैतिकता और मानवीय संवेदनशीलता को प्राथमिकता देने की प्रेरणा देता है। उदाहरण के लिए यदि कोई कंपनी किसी कानूनी कमी का लाभ उठाकर ग्राहकों को भ्रमित करती है, तो यह कानूनी रूप से गलत न होते हुए भी नैतिक रूप से अनुचित माना जाएगा।

मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार का आधार विश्वास होता है। व्यवसाय में ग्राहकों, कर्मचारियों, निवेशकों और समाज का विश्वास प्राप्त करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह विश्वास तभी संभव है जब संगठन अपने कार्यों में ईमानदारी और पारदर्शिता बनाए रखे। एक बार यदि विश्वास टूट जाता है, तो उसे पुनः स्थापित करना अत्यंत कठिन हो जाता है।

यह अवधारणा इस विचार पर आधारित है कि व्यवसाय समाज का एक अभिन्न अंग है। इसलिए व्यवसाय की जिम्मेदारी केवल अपने मालिकों और निवेशकों तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह समाज के विभिन्न वर्गों के प्रति भी उत्तरदायी होता है।[2] इसी कारण आधुनिक प्रबंधन में मूल्य आधारित व्यवहार को संगठनात्मक संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

- **मूल्य और व्यावसायिक नैतिकता का संबंध**

मूल्य और नैतिकता एक–दूसरे के पूरक हैं। मूल्य व्यक्ति या संगठन की मान्यताओं और आदर्शों को व्यक्त करते हैं, जबकि नैतिकता उन मूल्यों के आधार पर उचित और अनुचित व्यवहार का निर्धारण करती है। किसी भी व्यवसाय की नैतिकता उसके मूल्यों पर आधारित होती है। यदि संगठन के मूल्यों में ईमानदारी, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व शामिल हैं, तो उसकी कार्यशैली भी नैतिक होगी।

व्यावसायिक नैतिकता व्यवसाय को केवल आर्थिक लाभ प्राप्त करने के साधन के रूप में नहीं देखती। यह इस बात पर बल देती है कि व्यवसाय को समाज के व्यापक हितों को ध्यान में रखते हुए कार्य करना चाहिए। जब संगठन नैतिक सिद्धांतों का पालन करते हैं, तब वे ग्राहकों, कर्मचारियों और अन्य हितधारकों के साथ बेहतर संबंध स्थापित कर पाते हैं।[3]

नैतिकता का महत्व इसलिए भी बढ़ गया है क्योंकि आधुनिक समाज में सूचना का प्रवाह अत्यंत तेज हो गया है। यदि कोई कंपनी अनैतिक गतिविधियों में संलग्न होती है, तो उसकी जानकारी बहुत जल्दी सार्वजनिक हो सकती है। इससे उसकी प्रतिष्ठा को गंभीर क्षति पहुँच सकती है। इसलिए आज व्यवसायों के लिए नैतिकता केवल सामाजिक अपेक्षा नहीं बल्कि रणनीतिक आवश्यकता भी बन गई है।

व्यावसायिक नैतिकता संगठन को दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करती है। अल्पकालिक लाभ के लिए किए गए अनैतिक कार्य भविष्य में बड़े नुकसान का कारण बन सकते हैं। इसके विपरीत नैतिक व्यवहार संगठन की स्थिरता और निरंतर विकास सुनिश्चित करता है।

मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार की आवश्यकता

वर्तमान युग में मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार की आवश्यकता पहले की तुलना में अधिक बढ़ गई है। इसका मुख्य कारण यह है कि आज का उपभोक्ता अधिक जागरूक और सूचनाप्राप्त है। वह केवल उत्पाद की गुणवत्ता ही नहीं देखता बल्कि यह भी जानना चाहता है कि कंपनी अपने कर्मचारियों, ग्राहकों और समाज के साथ कैसा व्यवहार करती है।

विश्वास किसी भी व्यवसाय की सफलता का आधार होता है। यदि ग्राहक किसी संगठन पर विश्वास करते हैं, तो वे उसके उत्पादों और सेवाओं को प्राथमिकता देते हैं। विश्वास का निर्माण वर्षों में होता है लेकिन यह कुछ ही क्षणों में नष्ट हो सकता है। इसलिए मूल्य आधारित व्यवहार व्यवसाय के लिए अनिवार्य हो जाता है।[4]

व्यवसाय में कर्मचारियों की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। जब संगठन कर्मचारियों के साथ सम्मान और न्यायपूर्ण व्यवहार करता है, तब उनमें कार्य के प्रति समर्पण और निष्ठा विकसित होती है। वे संगठन के लक्ष्यों को अपनी जिम्मेदारी मानकर कार्य करते हैं। इससे उत्पादकता और कार्यकुशलता दोनों में वृद्धि होती है।

मूल्य आधारित व्यवहार निवेशकों के लिए भी महत्वपूर्ण होता है। निवेशक ऐसे संगठनों में निवेश करना पसंद करते हैं जिनकी प्रतिष्ठा अच्छी हो और जो पारदर्शी तरीके से कार्य करते हों। नैतिकता और उत्तरदायित्व संगठन के जोखिम को कम करते हैं, जिससे निवेशकों का विश्वास बढ़ता है।

समाज के स्तर पर भी मूल्य आधारित व्यवहार का विशेष महत्व है। व्यवसाय समाज के संसाधनों का उपयोग करते हैं और समाज से ही लाभ अर्जित करते हैं। इसलिए उनका दायित्व है कि वे समाज के विकास में योगदान दें। शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और रोजगार सृजन जैसे क्षेत्रों में योगदान देकर व्यवसाय सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्वहन कर सकते हैं।

व्यवसाय में ईमानदारी और सत्यनिष्ठा का महत्व

ईमानदारी मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार का सबसे महत्वपूर्ण आधार है। ईमानदारी का अर्थ है कि संगठन अपने सभी कार्यों में सत्य और निष्पक्षता का पालन करे। ग्राहकों को सही जानकारी देना, गुणवत्ता बनाए रखना, वित्तीय लेन–देन में पारदर्शिता रखना तथा झूठे वादों से बचना ईमानदारी के प्रमुख उदाहरण हैं।

सत्यनिष्ठा ईमानदारी से एक कदम आगे की अवधारणा है। इसका अर्थ है कि व्यक्ति या संगठन अपने सिद्धांतों और मूल्यों के प्रति दृढ़ रहे। कई बार ऐसी परिस्थितियाँ आती हैं जब अल्पकालिक लाभ प्राप्त करने के

लिए नैतिक मूल्यों से समझौता करने का अवसर मिलता है। सत्यनिष्ठ संगठन ऐसे अवसरों में भी अपने मूल्यों का त्याग नहीं करते।[5]

ईमानदारी और सत्यनिष्ठा संगठन की प्रतिष्ठा को मजबूत बनाती हैं। ग्राहक ऐसे संगठनों पर अधिक विश्वास करते हैं जो अपने वादों को पूरा करते हैं। इसी प्रकार कर्मचारी भी उन संस्थाओं के प्रति अधिक निष्ठावान रहते हैं जो निष्पक्ष और ईमानदार होती हैं।

इतिहास में अनेक उदाहरण मिलते हैं जहाँ कंपनियों ने अनैतिक व्यवहार के कारण अपनी प्रतिष्ठा खो दी। इसके विपरीत कई संगठन केवल इसलिए दशकों तक सफल रहे क्योंकि उन्होंने अपने मूल्यों और नैतिक सिद्धांतों को कभी नहीं छोड़ा। यह तथ्य स्पष्ट करता है कि दीर्घकालिक सफलता का आधार केवल आर्थिक संसाधन नहीं बल्कि नैतिक पूंजी भी होती है।

पारदर्शिता और उत्तरदायित्व का महत्व

मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार में पारदर्शिता का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। पारदर्शिता का अर्थ है कि संगठन अपने निर्णयों, नीतियों और कार्यों में स्पष्टता बनाए रखे तथा आवश्यक सूचनाओं को संबंधित हितधारकों से न छिपाए। आधुनिक व्यावसायिक वातावरण में पारदर्शिता विश्वास निर्माण का सबसे प्रभावी माध्यम मानी जाती है। जब कोई संगठन अपनी गतिविधियों के संबंध में खुला और स्पष्ट दृष्टिकोण अपनाता है, तब ग्राहकों, कर्मचारियों और निवेशकों के बीच उसके प्रति विश्वास की भावना विकसित होती है।

पारदर्शिता का संबंध केवल वित्तीय विवरणों तक सीमित नहीं है। यह संगठन की कार्यसंस्कृति, निर्णय प्रक्रिया, उत्पाद गुणवत्ता, मूल्य निर्धारण और ग्राहक सेवा जैसे अनेक क्षेत्रों से जुड़ी होती है। उदाहरण के लिए यदि कोई कंपनी अपने उत्पाद की विशेषताओं और सीमाओं के बारे में ग्राहकों को सही जानकारी देती है, तो ग्राहक उसके प्रति अधिक विश्वास रखते हैं। इसके विपरीत यदि कंपनी भ्रामक विज्ञापन या गलत दावों का सहारा लेती है, तो उसकी विश्वसनीयता प्रभावित होती है।

उत्तरदायित्व भी मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार का महत्वपूर्ण तत्व है। उत्तरदायित्व का अर्थ है कि संगठन अपने कार्यों और निर्णयों के परिणामों को स्वीकार करे तथा उनके प्रति जवाबदेह रहे। एक उत्तरदायी संगठन केवल लाभ प्राप्त करने तक सीमित नहीं रहता, बल्कि अपने निर्णयों के सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय प्रभावों का भी मूल्यांकन करता है। उत्तरदायित्व की भावना संगठन को अधिक संवेदनशील और नैतिक बनाती है।[6]

आज के समय में समाज व्यवसायों से यह अपेक्षा करता है कि वे केवल अपने हितों की पूर्ति न करें, बल्कि व्यापक सामाजिक हितों का भी ध्यान रखें। इसलिए पारदर्शिता और उत्तरदायित्व आधुनिक व्यावसायिक प्रबंधन के अनिवार्य घटक बन चुके हैं।

कर्मचारी संबंधों में मूल्य आधारित व्यवहार

किसी भी संगठन की सफलता उसके कर्मचारियों पर निर्भर करती है। कर्मचारी संगठन की सबसे महत्वपूर्ण संपत्ति होते हैं और उनकी कार्यक्षमता ही संगठन की प्रगति का आधार बनती है। इसलिए मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार का एक प्रमुख उद्देश्य कर्मचारियों के साथ सम्मानजनक, न्यायपूर्ण और संवेदनशील संबंध स्थापित करना होता है।

जब कर्मचारियों को समान अवसर, उचित वेतन और सुरक्षित कार्य वातावरण प्राप्त होता है, तब वे अपने कार्य के प्रति अधिक समर्पित रहते हैं। इसके विपरीत यदि संगठन में भेदभाव, पक्षपात या शोषण की स्थिति हो, तो कर्मचारियों का मनोबल कमजोर हो जाता है। इससे संगठन की उत्पादकता और कार्यकुशलता प्रभावित होती है।

मूल्य आधारित संगठन कर्मचारियों को केवल संसाधन के रूप में नहीं देखते, बल्कि उन्हें संगठन के विकास में सहभागी मानते हैं। ऐसे संगठन कर्मचारियों के विचारों का सम्मान करते हैं, उनकी समस्याओं को सुनते हैं और उनके विकास के लिए अवसर प्रदान करते हैं। इससे संगठन में विश्वास और सहयोग का वातावरण विकसित होता है।

कार्यस्थल पर नैतिकता का पालन कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य और संतुष्टि के लिए भी महत्वपूर्ण है। सम्मानजनक व्यवहार, लैंगिक समानता, कार्यस्थल सुरक्षा और निष्पक्ष मूल्यांकन जैसी व्यवस्थाएँ कर्मचारियों को सकारात्मक वातावरण प्रदान करती हैं। इससे संगठन के प्रति उनकी निष्ठा बढ़ती है और वे दीर्घकाल तक संस्था के साथ जुड़े रहते हैं।

ग्राहक संबंधों में मूल्य आधारित व्यवहार

ग्राहक किसी भी व्यवसाय की सफलता का आधार होते हैं। यदि ग्राहक संतुष्ट नहीं हैं, तो कोई भी संगठन लंबे समय तक सफल नहीं रह सकता। इसलिए मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार में ग्राहकों के हितों की रक्षा को विशेष महत्व दिया जाता है।

ग्राहकों के साथ ईमानदार व्यवहार का अर्थ है कि उन्हें उत्पाद या सेवा के संबंध में सही जानकारी प्रदान की जाए। किसी उत्पाद की गुणवत्ता, मूल्य और उपयोगिता के बारे में गलत जानकारी देना नैतिक रूप से अनुचित माना जाता है। ग्राहक आज पहले की तुलना में अधिक जागरूक हैं और वे उन कंपनियों को प्राथमिकता देते हैं जो पारदर्शिता और विश्वसनीयता बनाए रखती हैं।

ग्राहक संतुष्टि केवल उत्पाद बेचने तक सीमित नहीं होती। बिक्री के बाद सेवा, शिकायत निवारण और ग्राहक सहायता भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती है। मूल्य आधारित संगठन ग्राहकों की समस्याओं को गंभीरता से लेते हैं और उनके समाधान के लिए प्रभावी व्यवस्था विकसित करते हैं। इससे ग्राहकों के साथ दीर्घकालिक संबंध स्थापित होते हैं।

डिजिटल युग में ग्राहक डेटा की सुरक्षा भी एक महत्वपूर्ण नैतिक मुद्दा बन गया है। कंपनियों के पास ग्राहकों की व्यक्तिगत जानकारी होती है और उसका सुरक्षित उपयोग करना उनकी जिम्मेदारी है। यदि कोई संस्था ग्राहकों की जानकारी का दुरुपयोग करती है, तो उसका विश्वास और प्रतिष्ठा दोनों प्रभावित हो सकते हैं। इसलिए ग्राहक गोपनीयता की रक्षा मूल्य आधारित व्यवहार का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व और मूल्य आधारित व्यवसाय

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व अर्थात ब्रै आधुनिक व्यवसाय का एक महत्वपूर्ण आयाम है। इसका मूल उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि व्यवसाय केवल आर्थिक लाभ अर्जित करने तक सीमित न रहें, बल्कि समाज के विकास में भी योगदान दें। ब्रै मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार का व्यावहारिक स्वरूप है।

आज अनेक कंपनियाँ शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण और कौशल विकास जैसे क्षेत्रों में कार्य कर रही हैं। इन गतिविधियों का उद्देश्य समाज की समस्याओं के समाधान में सहयोग प्रदान करना है। जब कोई कंपनी समाज के विकास में योगदान देती है, तो उसकी सकारात्मक छवि बनती है और समाज में उसके प्रति सम्मान बढ़ता है।

CSR गतिविधियाँ संगठन और समाज के बीच मजबूत संबंध स्थापित करती हैं। लोग ऐसे संगठनों को अधिक सम्मान देते हैं जो केवल लाभ कमाने की बजाय सामाजिक कल्याण में भी योगदान देते हैं। इससे कंपनी की ब्रांड छवि मजबूत होती है और ग्राहकों का विश्वास बढ़ता है।

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व कर्मचारियों को भी प्रेरित करता है। जब कर्मचारी देखते हैं कि उनका संगठन समाज के लिए सकारात्मक कार्य कर रहा है, तो उनमें गर्व और प्रेरणा की भावना विकसित होती है। इस प्रकार CSR संगठन की आंतरिक संस्कृति को भी सकारात्मक बनाता है।

मूल्य आधारित नेतृत्व की भूमिका

किसी भी संगठन की संस्कृति और कार्यशैली काफी हद तक उसके नेतृत्व पर निर्भर करती है। यदि नेतृत्व नैतिक और मूल्य आधारित है, तो पूरा संगठन उसी दिशा में कार्य करता है। इसलिए मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार को विकसित करने में नेतृत्व की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

एक मूल्य आधारित नेता अपने कार्यों द्वारा उदाहरण प्रस्तुत करता है। वह केवल कर्मचारियों को नैतिकता का उपदेश नहीं देता, बल्कि स्वयं भी उन्हीं सिद्धांतों का पालन करता है। जब कर्मचारी अपने वरिष्ठ अधिकारियों को ईमानदारी और पारदर्शिता के साथ कार्य करते हुए देखते हैं, तो वे भी उसी व्यवहार को अपनाने के लिए प्रेरित होते हैं।

नेतृत्व संगठन में विश्वास और सहयोग का वातावरण विकसित करता है। एक अच्छा नेता कर्मचारियों के विचारों का सम्मान करता है, निष्पक्ष निर्णय लेता है और संगठन के हितों के साथ–साथ कर्मचारियों के हितों का भी ध्यान रखता है। इससे संगठनात्मक संस्कृति मजबूत होती है।

मूल्य आधारित नेतृत्व दीर्घकालिक दृष्टिकोण अपनाता है। ऐसा नेता अल्पकालिक लाभ के लिए नैतिक मूल्यों का त्याग नहीं करता। वह संगठन की प्रतिष्ठा, सामाजिक उत्तरदायित्व और सतत विकास को प्राथमिकता देता है। यही कारण है कि सफल संगठनों में मूल्य आधारित नेतृत्व को विशेष महत्व दिया जाता है।

डिजिटल युग में मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार

तकनीकी विकास ने व्यवसायों के कार्य करने के तरीके को पूरी तरह बदल दिया है। इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ई–कॉमर्स और डिजिटल संचार ने व्यापार को अधिक तेज और प्रभावी बनाया है। हालांकि इसके साथ अनेक नैतिक चुनौतियाँ भी सामने आई हैं।

डिजिटल युग में डेटा गोपनीयता सबसे महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक है। कंपनियाँ ग्राहकों की व्यक्तिगत जानकारी एकत्र करती हैं और उसका उपयोग विभिन्न उद्देश्यों के लिए करती हैं। यदि इस जानकारी का दुरुपयोग किया जाए, तो ग्राहकों की निजता प्रभावित हो सकती है। इसलिए डेटा सुरक्षा और गोपनीयता को मूल्य आधारित व्यवहार का आवश्यक भाग माना जाता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और स्वचालन के बढ़ते उपयोग ने भी नए नैतिक प्रश्न उत्पन्न किए हैं। व्यवसायों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि तकनीक का उपयोग मानव हितों के विरुद्ध न हो। तकनीकी प्रगति का उद्देश्य लोगों के जीवन को बेहतर बनाना होना चाहिए, न कि केवल लाभ बढ़ाना।

डिजिटल विज्ञापन और सोशल मीडिया के क्षेत्र में भी नैतिकता का महत्व बढ़ गया है। भ्रामक प्रचार, गलत सूचनाएँ और उपभोक्ताओं को भ्रमित करने वाली रणनीतियाँ अनैतिक मानी जाती हैं। इसलिए डिजिटल युग में भी ईमानदारी और पारदर्शिता के सिद्धांत उतने ही महत्वपूर्ण हैं जितने पारंपरिक व्यवसाय में थे।

भारतीय संदर्भ में मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार

भारतीय संस्कृति में नैतिकता और मानवीय मूल्यों को सदैव विशेष महत्व दिया गया है। सत्य, अहिंसा, सेवा, त्याग और सहयोग जैसे आदर्श भारतीय जीवन दर्शन के प्रमुख तत्व रहे हैं। इन मूल्यों का प्रभाव भारतीय व्यावसायिक परंपरा में भी दिखाई देता है।

महात्मा गांधी ने व्यवसाय के क्षेत्र में ट्रस्टीशिप का सिद्धांत प्रस्तुत किया था। उनके अनुसार व्यवसायी समाज की संपत्ति का संरक्षक होता है और उसे अपने संसाधनों का उपयोग समाज के कल्याण के लिए करना चाहिए। गांधीजी का यह विचार आज भी मूल्य आधारित व्यवसाय के लिए प्रेरणास्रोत माना जाता है।[7]

भारतीय उद्योग जगत में अनेक संस्थाओं ने नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व को अपनाकर सफलता प्राप्त की है। इन संस्थाओं ने यह सिद्ध किया है कि व्यवसायिक सफलता और सामाजिक उत्तरदायित्व

एक–दूसरे के पूरक हो सकते हैं। भारतीय कंपनियाँ शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास और पर्यावरण संरक्षण जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं।

भारत में CSR से संबंधित कानूनी प्रावधानों ने भी सामाजिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा दिया है। इससे व्यवसायों में यह समझ विकसित हुई है कि समाज के विकास के बिना व्यवसाय की दीर्घकालिक सफलता संभव नहीं है।

निष्कर्ष

मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार आधुनिक व्यवसाय की आवश्यकता ही नहीं बल्कि उसकी वास्तविक शक्ति है। यह व्यवसाय को केवल लाभ कमाने वाली संस्था से आगे बढ़ाकर समाज के विकास में योगदान देने वाली उत्तरदायी संस्था के रूप में स्थापित करता है। ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, सम्मान और न्याय जैसे मूल्य किसी भी संगठन की सफलता के आधार स्तंभ होते हैं।

आज का व्यावसायिक वातावरण अत्यंत प्रतिस्पर्धी और गतिशील है। ऐसी परिस्थितियों में संगठन अल्पकालिक लाभ के लिए नैतिक मूल्यों की उपेक्षा करने का प्रलोभन महसूस कर सकते हैं, लेकिन इतिहास और अनुभव यह सिद्ध करते हैं कि स्थायी सफलता उन्हीं संस्थाओं को प्राप्त होती है जो अपने मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहती हैं। मूल्य आधारित व्यवहार संगठन की प्रतिष्ठा को मजबूत बनाता है, ग्राहकों का विश्वास बढ़ाता है, कर्मचारियों को प्रेरित करता है और निवेशकों को आकर्षित करता है।

इसके अतिरिक्त मूल्य आधारित व्यवसाय समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की क्षमता रखते हैं। वे रोजगार सृजन, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक विकास जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इस प्रकार वे केवल आर्थिक प्रगति ही नहीं बल्कि सामाजिक और नैतिक विकास में भी सहभागी बनते हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि मूल्य आधारित व्यावसायिक व्यवहार किसी भी संगठन की दीर्घकालिक सफलता, सामाजिक स्वीकृति और नैतिक पहचान का आधार है। वर्तमान और भविष्य दोनों में व्यवसायों के लिए यह आवश्यक होगा कि वे अपने निर्णयों और कार्यों में नैतिक मूल्यों को सर्वोच्च प्राथमिकता दें। यही दृष्टिकोण एक न्यायपूर्ण, उत्तरदायी और सतत व्यावसायिक व्यवस्था का निर्माण कर सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. वेलास्केज, मैनुअल व्यावसायिक नैतिकता रू अवधारणाएँ एवं अध्ययन पियर्सन प्रकाशन
2. रॉबिन्स, स्टीफन पी. एवं कौल्टर, मैरी प्रबंधन पियर्सन एजुकेशन
3. क्रेन, एंड्रयू एवं मैटन, व्यावसायिक नैतिकता ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
4. त्रिपाठी, पी. सी. एवं रेड्डी, पी. एन., प्रबंधन के सिद्धांत, टाटा मैकग्रा हिल।
5. ड्रकर, पीटर एफ., प्रबंधन रू कार्य, उत्तरदायित्व एवं व्यवहार
6. हैरोल्ड एवं वेहरिच हेंज, प्रबंधन के मूल तत्व, व्यवसाय और समाजः नैतिकता एवं हितधारक प्रबंधन
7. गांधी, मोहनदास करमचंद, सत्य के साथ मेरे प्रयोग, नवजीवन प्रकाशन।

❑❑❑